Sem-4
MJ-6

ध्वनि-परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ

भाषा की सर्वप्रधान विशेषताओं में से एक उसकी परिवर्तनशीलता या विकासशीलता है। इसी विशेषता के कारण किसी प्राचीन भाषा का अनेक भाषाओं के रूप में परिवर्तन होता है। ध्वनि, रूप, वाक्य और अर्थ – भाषा के सभी अंगों में यह परिवर्तन दिखता है। जैसे, संस्कृत शब्द – 'घोटक' की ध्वनियाँ परिवर्तित होते-होते आज हिन्दी में 'घोड़ा' बना है। यह विकास-क्रम है – घोटक > घोडग > घोडअ > घोड़ा।

ध्वनि-परिवर्तन आंतरिक और वाह्य दोनों कारणों से होता है। आंतरिक कारण शब्द-ध्वनि के भीतर होते हैं जबकि वाह्य कारण बाहरी परिस्थिति या वक्ता के रूप में होते हैं।

आन्तरिक कारण :– ये इस प्रकार हैं। —

① ध्वनि-परिवेश – किसी ध्वनि में परिवर्तन उसके आसपास की ध्वनियों के कारण होता है। जैसे, 'घोटक' में 'ट्' ध्वनि अघोष है, किन्तु उसके पहले 'ओ' ध्वनि और बाद में 'अ' ध्वनि के घोष होने के चलते वह भी घोष ध्वनि – 'ड्' में परिवर्तित हो गया।

② ध्वनि-प्रकृति – शब्दों में कुछ ध्वनियाँ निर्बल होती हैं, जिनका प्रायः परिवर्तन हो जाता है। जैसे, 'अग्नि' की 'न्' ध्वनि का लोप हो गया।

③ स्थिति अनुसार ध्वनि की शक्ति – संयुक्त व्यंजनों में प्रायः पहली ध्वनि निर्बल होती है और उसका लोप हो जाता है। जैसे, सप्त > सात।

④ शब्द की लम्बाई – अधिक लम्बे शब्द की उच्चारण-असुविधा के कारण ध्वनि-परिवर्तन घटित होते हैं। जैसे, उपाध्याय > ओझा

वाह्य-कारण – ये इस प्रकार हैं –

① अनुकरण की अपूर्णता – भाषा अनुकरण द्वारा अर्जित होती है। अनुकरण सही ढंग से न हो पाने के कारण ध्वनि परिवर्तित होती है। जैसे 'सिगनल' शब्द को 'सिंगल' कहना।

② अज्ञान – दूसरी भाषा के प्रति अज्ञानता के कारण प्रायः ध्वनि-परिवर्तन होता है। जैसे, 'गंगाजी' को अंग्रेजों द्वारा 'गैंगेज' कहना या 'कम्पाउन्डर' को कम्पोडर कहना।

③ भ्रामक व्युत्पत्ति – किसी अपरिचित शब्द को जब लोग सुनते हैं तो पहले-से ज्ञात मिलते-जुलते शब्द के द्वारा उसे बोलने लगते हैं। जैसे, 'हू कम्स देयर' को इन शब्दों से अनभिज्ञ व्यक्ति 'हुकुम सदर' कहने लगा।

④ बोलने में शीघ्रता — इस कारण भी ध्वनि-परिवर्तन उपस्थित होता है। जैसे, 'सरदार जी' को 'दारजी' या 'पंडित जी' को 'पंडीजी' कहना।

⑤ मुखसुख या प्रयत्नलाघव — यह ध्वनि-परिवर्तन का सबसे प्रधान बाह्य कारण है। वक्ता प्रायः बोलने में परिश्रम से बचना चाहता है और कठिन ध्वनि में परिवर्तन हो जाता है। जैसे, अंग्रेजी के 'walk' में 'ल्' ध्वनि लुप्त हो गयी है या स्टेशन को हमारे यहाँ इस्टेशन या टेशन या टीसन उच्चारित करते हैं।

⑥ भावुकता — भावुकता में शब्दों की ध्वनियाँ प्रायः बदल जाती हैं। जैसे, चाची > चचिया या बेटी > बिट्टो।

⑦ लेखन के कारण — किसी शब्द का अन्य लिपि में लेखन प्रायः ध्वनि में परिवर्तन लाता है। जैसे, रोमन लिपि में 'गुप्त' या 'सिंह' का लेखन GUPTA या SINHA होता है। इसी से गुप्त > गुप्ता, या सिंह > सिन्हा हो जाता है।

⑧ सादृश्य — कुछ शब्द दूसरे की समानता के कारण बदल जाते हैं। जैसे, संस्कृत में 'द्वादश' के कारण एकदश > एकादश हो गया।

⑨ विदेशी ध्वनि का अभाव — विदेशी भाषा की जो ध्वनियाँ अपनी भाषा में नहीं होती, उसका परिवर्तन प्रायः निकटस्थ ध्वनियों में हो जाता है। जैसे, अंग्रेजी की 'ट्' ध्वनि हिन्दी की ट् ध्वनि के समान मूर्द्धन्य नहीं है, तो उसे मूर्द्धन्य बनाकर बोला जाता है। जैसे — REPORT > रपट।

⑩ विदेशी ध्वनि का प्रभाव — कभी-कभार भाषा में विदेशी ध्वनि का आगम होता है और ध्वनि परिवर्तित होती है। जैसे, द्रविड़ भाषाओं से आर्यभाषाओं में 'ट्' ध्वनि का आगमन।

⑪ बलाघात — शब्द को जिस ध्वनि पर बल दिया जाता है, वह ध्वनि सबल होकर अन्य ध्वनि को निर्बल करती है और धीरे-धीरे उनका लोप हो जाता है। जैसे, अभ्यंतर > भीतर।

ध्वनि-परिवर्तन के उपर्युक्त कारणों के साथ ही भौगोलिक एवं सामाजिक प्रभाव के चलते भी ध्वनियों में परिवर्तन होते हैं। जैसे, ठंडे स्थानों से विवृत्त ध्वनियों का लोप होना या क्रोध आदि क्षणों में अतिरिक्त ध्वनियों का जुड़ना। स्पष्ट है कि ध्वनि-परिवर्तन ही वह प्रमुख चिह्न है जिससे भाषा का विकास दिखता है।

ध्वनि-परिवर्तन का संबंध किसी भाषा के ~~व्यवहृत~~ व्यवहृत शब्दों की ध्वनियों में परिवर्तन से है, जो इतिहास के प्रवाह में घटित होते हैं। ये परिवर्तन अनेक दिशाओं या रूपों में होते हैं, जो इस प्रकार हैं। ——

① लोप – बोलने में मुखसुख या शीघ्रता के प्रभाव से कुछ ध्वनियों का लोप हो जाता है, जो स्वर, व्यंजन या अक्षर किसी का भी हो सकता है। जैसे – अहाता > हाता, उपवास > उपास, भाण्डागार > भंडार आदि।

② आगम – उच्चारण-सुविधा से कभी-कभी नयी ध्वनि आ जाती है। जैसे – स्टेशन > इस्टेशन, कलंक > अकलंक, जन्म > जनम।

③ विपर्यय – कभी-कभी कोई ध्वनि अपना स्थान बदलकर आगे-पीछे हो जाती है। जैसे – भोजपुरी में पहुँचना > चहुँपना, अमरूद > अरमूद।

④ समीकरण – एक ध्वनि कभी-कभी दूसरी को प्रभावित कर अपना रूप दे देती है। यह स्वर या व्यंजन किसी ध्वनि के साथ होता है। जैसे – चक्र > चक्का, अँगुलि > उँगली, ~~शर्करा~~ शर्करा > सक्कर।

⑤ विषमीकरण – समान ध्वनि के प्रभाव से ध्वनि अपना स्वरूप छोड़ दूसरी बन जाती है। यह भी स्वर और व्यंजन दोनों में होता है। जैसे – काक > काग या तिलक > टिकली।

⑥ संधि – संधियुक्त शब्दों के उच्चारण से ध्वनियाँ बिल्कुल नये रूप में आ जाती हैं। जैसे – नयन > नइन > नैन।

⑦ स्वतः अनुनासिकता – उच्चारण सुविधा से कई ध्वनियाँ अनुनासिक हो जाती हैं। जैसे – अश्रु > आँसू, भ्रू > भौं।

⑧ मात्राभेद – स्वराघात आदि के प्रभाव से दीर्घ से ह्रस्व या ह्रस्व से दीर्घ मात्रा की ध्वनियाँ आ जाती हैं। जैसे – पुत्र > पूत, पाताल > पताल।

⑨ घोषीकरण – उच्चारण सुविधा से अघोष ध्वनियाँ घोष हो जाती हैं। जैसे – शाक > साग या कंकण > कंगन।

⑩ अघोषीकरण – कुछ ध्वनियाँ घोष से अघोष भी हो जाती हैं। जैसे – उंडा > डंटा या मदद > मदत।

⑪ महाप्राणीकरण – कुछ अल्पप्राण ध्वनियाँ परिवर्तित होकर महाप्राण हो जाती हैं। जैसे – वाष्प > भाफ या हस्त > हाथ।

⑫ अल्पप्राणीकरण – महाप्राण ध्वनियाँ कभी-कभी अल्पप्राण